शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 63-72

कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन

डॉ. अनूषा निल्मिणी सल्वतुर

शोध-सार

यह सर्वमान्य है कि सुश्री कृष्णा सोबती हिन्दी उपन्यास साहित्य के उत्कर्ष काल की उदीयमान लेखिका हैं। कहा जाता है कि आंचलिक उपन्यासों का प्रणयन करके उन्होंने लेखिकाओं द्वारा किये गये कथा-साहित्य में एक अभाव की पूर्ति की है।दूसरी ओर, यह मान्यता है कि हिन्दी कथा-साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त करनेवाली लेखिकाओं में कृष्णा सोबती की अलग पहचान है।

गाँव में जन्म लेने और महानगरों में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर लेने के कारण एक ओर उनके व्यक्तित्व में देहाती कृषक वर्ग में दिखाई देने वाला खुलापन है, तो दूसरी ओर शहरी सभ्यता की स्पष्ट झलक भी है।उन्होंने स्वीकार किया है कि देहातीपन उनकी आत्मा से बँधा है, तो नागरिकता उनके बाह्य स्वभाव या सूरत शकल में।शहर के उच्च वर्ग के बँधे-बँधाए व्यवहार, मान्यताएँ, साज-सँवार और अनुशासन को उन्होंने उसी ढाँचे में लिया है और आत्मसात भी किया है।इसीलिए विचारकों की यही मान्यता है कि जीवन को देखने की उनकी दृष्टि अधिक संयमित दिखाई देती है।जो भी हो, प्रस्तुत शोध-पत्र में इस पर विचार-विमर्श करने की कोशिश की गयी है कि लेखिका ने आधुनिक नारी-जीवन पर तथा उनकी समस्याओं पर क्या विचार रखा है।लेखिका द्वारा लिखे गये इने-गिने उपन्यासों में से 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में चित्रित 'मित्रो' का चरित्र ही उसके लिए आधार बनाया गया है ।

बीज शब्द : *हिंदी उपन्यास साहित्य, कृष्णा सोबती, आंचलिक उपन्यास, नारी-जीवन, नारी-समस्या ।*

प्रस्तावना

वास्तव में पुरुष प्रधान समाज में नारी को अपनी पहचान बनाना और अपने आत्मसम्मान को बनाये रखना काफी मुश्किल है। लेकिन कहते हैं कि कृष्णा सोबती ने अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास के बल पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान अनायास ही बनाया है और उसमें इस लेखिका की सफलता, अधिकतर उपन्यास लेखिका के रूप में दिखाई देती है।उसके अतिरिक्त कहानी, संस्मरण और अनुवाद के क्षेत्र में भी उन्होंने सराहनीय कार्य किया है ।

आलोचकों के कथनानुसार कृष्णा सोबती ने अपनी स्वतंत्र-चेतना और युगीन यथार्थ के साक्षात्कार से जिस दृष्टिकोण को अपनाया है, उसे अपनी रचनाओं के द्वारा व्यक्त करने का प्रयास किया है। सही साहित्यकार की परिभाषा करते हुए उन्होंने जो बात प्रस्तुत की है उससे उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप हमारे सामने आता है।

> सच्चे लेखक को अपने में विशुद्ध आत्मा का होना आवश्यक है ।
>
> (Andraz, Reema 2013: 45)

उसी कर्तव्य को निभाते हुए कृष्णा सोबती के द्वारा प्रयुक्त साहित्यिक विधाओं की विविधता एवं रसनीयता ने उनकी अल्पसंख्यक रचनाओं को साहित्य जगत में चिर प्रतिष्ठित और बहुचर्चित बनाया है।

साहित्य अकादमी तथा कथा चूड़ामणि पुरस्कारों से पुरस्कृत सर्वप्रथम लेखिका के रूप में अलंकृत कृष्णा सोबती अपने छः उपन्यासों के कारण ही हिंदी साहित्य जगत में अधिक प्रसिद्ध हुई हैं।उनके प्रकाशित उपन्यास हैं- डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, सूरजमुखी अँधेरे के, ज़िन्दगीनामा, दिलो दानिश और समय सरगम।

विश्लेषण

नायिका प्रधान इस उत्कृष्ट कृति 'मित्रो मरजानी' के कारण कृष्णा सोबती ने हिंदी कथा जगत में एक सफल कथाकार के रूप में ख्याति अर्जित की है। 1967 ई. में प्रकाशित 'मित्रो मरजानी' कृष्णा सोबती का सबसे अधिक चर्चित उपन्यास है। पंजाब के ग्रामीण परिवेश के एक संयुक्त परिवार में घटित होनेवाले झगड़े, प्यार-मोहब्बत, रोना-हँसना आदि के चित्रण के साथ एक प्रतिनिधि नारी की सहानुभूतिपूर्ण कहानी भी इस उपन्यास में है।गुरुदास तथा धनवंतरी के संयुक्त परिवार की मँझली बहू, सुमित्रावंती अर्थात मित्रो, जिसमें यौवन की अमिट प्यास है, उसके इर्द-गिर्द इस उपन्यास का कथानक घूमता है। समीक्षकों के

विचारानुसार इस उपन्यास की नायिका 'मित्रो' सम्पूर्ण हिंदी उपन्यास साहित्य जगत में एक ऐसी वेगवती नायिका के रूप में मानी जाती है, जिसमें निर्भीक, ममतामयी गुण के साथ-साथ कामवृत्ति भी अपने चरम पर है।इस उपन्यास में चित्रित गुरुदास का परिवार पूर्णतः पारम्परिक है, जिसमें वे सपत्नीक, अपने तीन पुत्रों, पुत्र-वधुओं के साथ रहते हैं।बड़ा पुत्र बनवारीलाल एवं उसकी पत्नी सुहागवन्ती एक आदर्श दम्पति दर्शाये गये हैं। किंतु शेष दोनों मँझला पुत्र, सरदारी लाल एवं उसकी पत्नी सुमित्रावन्ती अपने असफल दाम्पत्य जीवन के कारण तथा सबसे छोटा पुत्र गुलजारी लाल के परिवार के साथ-साथ अन्य पात्रों का वर्णन भी उपन्यास में किया गया है। जैसे गुरुदास की पुत्री 'जनको', सुमित्रावन्ती की माँ बालो एवं फूलावन्ती के मायके के गौण पात्रों की कथा भी सफल एवं रुचिपूर्ण तरीके से वर्णित हुई है। अपनी माता बालो के कुप्रभाव के कारण मित्रो एक परंपरावादी परिवार में स्वयं को स्थापित नहीं कर पाती और इसमें उसके पति का पौरुषहीन होना आग में घी का कार्य कर उसकी कामाग्नि को अधिक प्रज्वलित कर देता है। बदलते सामाजिक परिपेक्ष्य में नैतिकता, अनैतिकता संबंधी नयी परिभाषाएँ बन रही हैं।आलोचक यह कहते हैं कि मित्रो मरजानी की नायिका मित्रो का चरित्र इस परिवर्तित समाज-संदर्भ में नारी की नयी मानसिकता का परिचायक है।

'मित्रो मरजानी' हिंदी का एक ऐसा उपन्यास है, जो अपने अनूठे कथा-शिल्प के कारण बहु चर्चित है।कथा एक निम्न मध्यम वर्गीय संयुक्त पंजाबी परिवार में घटित होती है, जो पूरी जीवंतता या सहजता के साथ आगे बढ़ती है।

गुरुदास लाल तथा धनवन्ती के तीन बेटे हैं- बनवारी लाल, सरदारी लाल और गुलजारी लाल।उनके तीन बहुओं के नाम हैं- सुहागवन्ती, सुमित्रावन्ती और फूलावन्ती।उन लोगों के संयुक्त परिवार में निरन्तर होने वाले झगड़ों को प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है।तीन पुत्र वधुओं के चरित्र की विविधता तथा सास-बहू का सामान्य परिचय और व्यवहार बहुत ही सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वस्तुतः इस उपन्यास का कथा-विषय कोई बहुत नवीन या रोचक नहीं है; लेकिन इस परिवार की मँझली पुत्र वधू सुमित्रावन्ती या मित्रो के चरित्र ने इस उपन्यास को जीवन्त बनाने में विशिष्ट भूमिका निभायी है।मित्रो मरजानी का यह केन्द्रीय पात्र मित्रो अपूर्व इसलिए है कि वह बहुत सहज है।मित्रो की वास्तविकता को लेखिका ने उपन्यास में इतनी मनमोहक शैली में चित्रित किया है,

जिससे लगता है कि मित्रो कोई असामान्य या कल्पित पात्र नहीं है। वह सभी तरह की सामाजिक रीतियों और मान्यताओं से परे है, समाज के प्रतिकूल आचरण होते हुए भी वह इस उपन्यास की नायिका है। कहा जाता है कि हिंदी उपन्यासों में इससे पहले मित्रो जैसा चरित्र नहीं रचा गया था।जबकि भारतीय समाज में मित्रो जैसे चरित्र अतीत में भी थे और आज भी हैं। विचारकों के कथनानुसार यह तो कृष्णा सोबती की लेखकीय प्रतिभा तथा उनकी संवेदनशीलता की अपूर्वता है कि आलोच्य उपन्यास में मित्रो के रूप में समाज की इस स्त्री का यथार्थतः निर्माण करने का अवसर मिला।मित्रो मरजानी के 50 वें वर्ष-गाँठ के उपलक्ष्य में हुए साक्षात्कार में भी कृष्णा सोबती ने स्वयं अपने द्वारा निर्मित पात्र मित्रो को जीवन्त रूप प्रदान किया है, जो ऐसा मालूम पड़ता है कि मित्रो कोई परायी नहीं, भारतीय समाज में जीती-जागती सजीव नारी ही है-

> ...अब मित्रो सिर्फ एक किताब नहीं रही, समय के साथ-साथ वह एक व्यक्तित्व में बदल गयी है।अब वह एक संयुक्त परिवार की स्त्री नहीं है, जो हर बात में पीछे रखी जाती है।उसे अपनी सेक्सुअल डिजायर व्यक्त करने का अधिकार है और ये अधिकार उसने अर्जित किया है और यह एक विस्मयकारी बात भी है कि एक इतना चुलबुलाहट पैदा करने वाला नाम अब इतनी गंभीरता से लिया जा रहा है।पिछली सदी की जो दस बड़ी किताबें आती हैं और ये मैं जानती हूँ कि ये लेखक का काम नहीं है, ये उसका अपना व्यक्तित्व था, जिसे उसने खुद तैयार किया ।...
>
> (तिवारी 2016)

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कृष्णा ने मित्रो मरजानी उपन्यास के माध्यम से समाज को एक चरित्र दिया जो अपने आपसे प्यार करती है, वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में तनिक संकोच नहीं करती। अपनी शारीरिक इच्छाओं के प्रति जागृत एवं इच्छुक मित्रो, अपने पति से असंतुष्टि की बात किसी के भी सामने चाहे वे जेठ, जेठानी या ससुर ही क्यों न हो, खुलकर बोलती है -

> ..और मेरी इस देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मछली सी तड़पती हूँ !..
>
> (सोबती 2007:20)

> अम्मा, मैं तो ऐसी देवी कि छूने से पहले ही आसन विराज जाऊँ, पर भक्त बेचारा तो.
>
> (सोबती 2007:75)

> ...मेरा बस चले तो गिनकर सौ कौरव जन डालूँ, पर अम्मा, अपने लाड़ले बेटे का भी तो आड़तोड़ जुटाओ ! निगोड़े मेरे पत्थर के बुत में भी कोई हरकत तो हो !...
>
> (सोबती 2007:75)

मित्रो, अपनी अंतरात्मा में जो जल रहा है, वही बुझाने के उद्देश्य में ही हर वक्त तड़पती रहती है।जहाँ, जिस समय, दिल का आग्रह होता है, वहाँ, उस समय वह अपने पति से अनुरोध करने को तैयार है -

> ...सरदारी लाल कुछ कहने को हुआ कि मित्रो ने बढ़ शरबती ओठों से मुँह पर साँकल लगा दी।और चुप्पे से कहा- ग़म की गुत्थी सुलझ गयी, दिलवर सैंया, अब अपनी लैला की सुध लो !... (सोबती 2007:50)

पति को जब खाना खिलाने चलती, तब भी वह उसको अपनी ओर आकर्षित करवाने की कोशिश में है -

> ...चारपाई पर बैठे सरदारी को चौंकाने के लिए मित्रो ने पाँव से आहट की, बाँहों से छनकार किया, तो भी फिक्रों में डूबा सास का बेटा हिला-डुला नहीं तो मित्रो के जी ढेरों प्यार उमड़ आया।हथेली पर थाली टिका, पाँव चारपाई की बाँही पर रखा और आँखें नचाकर कहा- लो, महाराज, बन्दी हाजिर ! चाहो तो मेरी यह चिकनी-चुपड़ी सौत निगल लो, न हो तो मुझे ही चबा लो !... (सोबती 2007:46)

इसके अतिरिक्त वह गृहस्थी में निपुण है।गौ के समान सीधी जेठानी सुहागवन्ती का गौरव करती है और कुटिल देवरानी फूलावन्ती के विरुद्ध सास का साथ भी देती है। एक बार जब मित्रो को पता चलता है कि पति सरदारी लाल को किसी कारणवश पैसे चाहिए तो वह तनिक भी संकोच नहीं करती, और उसे पैसे देती है। देते वक्त कृष्णा ने मित्रो के मुँह से जो शब्द निकलवाये हैं, उनसे उसकी पति-परायणता का आभास मिलता है। वास्तव में मित्रो के प्यासी दिल से परिचित पाठकों के सामने उसका उदार व्यक्तित्व भी इससे प्रकट हो जाता है -

> अपने साहब जी के लिए जो इतना भी न कर सके वह मित्रो न हुई, कि कँगली हुई !. (सोबती 2007:49)

> ...यह दमड़ी दात परवान करो, लाल जी ! कौन इस नाँवे के बिना मित्रों की बेटी कँवारी रह जाएगी ?...(सोबती 2007:49)

> ...महाराज जी, न थाली बाँटते हो...न नींद बाँटते हो, दिल के दुखड़े ही बाँट लो ।

(सोबती 2007:49)

मित्रो के इस अनौखे चरित्र से प्रभावित उसके पति, सरदारी लाल अपनी पत्नी के द्वारा किये गये कुकर्मों पर पछताता भी है -

> ...चलन तो इसके बुरे, पर इस पर हाथ उठाना सोहता नहीं ।...(सोबती 2007:49)

मित्रो पर दुनिया जो कहती है, उस पर एक बार धनवन्ती अपनी बड़ी बहू सुहागवन्ती से पूछती है। उसने एक साधारण औरत होते हुए भी एक अनुभवी के रूप में मित्रो के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जो एकदम उसके चरित्र के लिए सही भी मालूम पड़ता है -

> ...हम पिचके जन अपनी छोटी बुद्धि से दूसरों के छल-छिद्र, दोष-विचार क्या पड़ताले, अम्मा? खुली-डुली देवरानी एक घड़ी स्याह, दूसरी घड़ी सफेद। उसके मन में क्या है, वही जाने, पर तन उसके तो ऐसी प्यास व्यापती है कि सौ घट भी थोड़े। (सोबती 2007:84)

ऐसे समाज में जब औरत को अपना जीवन साथी तक चुनने का अधिकार नहीं दिया जाता और ऐसा समाज, जहाँ औरत काम-वासना के प्रति अपनी रुचि दिखाती है, तो उसके चरित्र को दूषित समझा जाता है।उसी समाज में मित्रो सीना ठोककर अपनी ज़रूरतों को व्यक्त करती है अर्थात अपने अधिकारों के लिए लड़ती है। वह जितना लड़ती है, उतना पाठकों में यह बात घर कर लेती कि ये किसी-न-किसी दिन अपने पति एवं ससुराल को छोड़कर अपनी प्यास बुझाने चली जाएगी।लेकिन लेखिका ने मित्रो के चरित्र का निर्माण इसलिए किया है कि उसके माध्यम से एक उत्कृष्ट नारी का चित्रण किया जा सके। कथा के अंत में जब उसके पीहर में माँ बालो के साथ जो कुछ घटनाएँ घटती हैं, उनसे ही उसे जीवन का यथार्थ बोध होने लगता है। तब, मित्रो देह की भूखी नहीं, बल्कि प्यार चाहने वाली, महत्वाकांक्षी और साहसी महिला के रूप में हमारे समक्ष आती है -

> ...मित्रो ने घरवाले की छाती में मुँह छिपा लिया-मेरे हरमन मौला ! यही किस्सा बीता तुम्हारी मित्रो के साथ ! फिर बाँहों से अँगड़ाई ली, हाथों को छटखा-मुरका उठ बैठी।सैयाँ के हाथ दबे, पाँव दबे, सिर-हथेली ओठों से लगा झूठ-मूठ की थू कर बोली-कहीं मेरे साहिब जी को नज़र न लग जाए इस मित्रो मरजानी की!... (सोबती 2007:99)

मित्रो के अतिरिक्त इस उपन्यास में अन्य नारी पात्रों का भी यथार्थ के धरातल पर चित्रण किया गया है। सास, धनवन्ती ढलती उम्र में अपने जीवन साथी की गिरती तबीयत की चिंता में डूबी, तीन पुत्रों तथा पुत्र वधुओं के साथ एक मार्गदर्शक बनी रहती है। एक तरफ बड़ी बहू सुहागवन्ती है जो कि हर तरफ से एक ऐसी बहू है, जिसकी गणना एक समझदार, अच्छी-भली औरतों में होती है। दूसरी तरफ सबसे छोटी फूलावन्ती है जिसका स्वभाव सुहाग से पूर्णतः अलग है।अंत में यह होता

है कि गुलजारी तथा उसकी पत्नी फूलावन्ती परिवार से अलग हो जाते हैं, जैसे अकसर संयुक्त परिवारों में देखने को मिलता है।

कृष्णा ने इस संयुक्त परिवार के दो मुख्य खंभे, गुरुदास और धनवन्ती के आपसी प्रेम, गौरव तथा स्नेह-भरे आचरण का जिस प्रकार अंकन किया है, उससे धनवन्ती का आदर्श-पत्नी-रूप उभर आता है -

> ...एक नहीं, अनेक पुरानी-मीठी बातें आँखों में घूम गयी।रह-रह धनवन्ती अपने सुख-दुःख के साथी के पाँव पर हाथ फेरती रही और रोती रही। गुरुदास ने पाँव फैला घरवाली की गोद में टिका दिये।फिर लम्बे पल तक धनवन्ती की ओर देखते-देखते हँस दिये-धनवन्ती, जमाने का रूप-रंग बदल गया पर तेरी रावली नाक नहीं !..(सोबती 2007:10)

दूसरी ओर धनवन्ती परिवार की आदर्श-माँ या सास का रूप ले लेती है।अपना बड़ा बेटा सरदारी लाल और उसकी पत्नी मित्रो के बीच जब झगड़ा होता तब आदर्श-माँ के रूप में सामाजिक मान-मर्यादाओं की याद दिलाते हुए आदेश देती है, जिसे भारतीय पारिवारिक इकाई का केन्द्रबिंदु कह सकते हैं -

> ...धनवन्ती ने झपटकर हाथ से टोक दी-चुप, बुरे माथे वाले ! तेरी घरवाली न हुई कि बैरिन हो गयी...छिः-छिः...फिर पास आ बहू की पीठ पर हाथ रखा और पुचकारकर कहा-समित्रावन्ती, इसे जिद चढ़ी है तो तू ही आँख नीची कर ले। बेटी, मर्द मालिक का सामना हम बेचारियों को क्या सोहे ?...

(सोबती 2007:12)

अपना छोटा बेटा घर छोड़ पत्नी के पीहर जाते वक्त धनवन्ती अपने को सास के पद पर पाते हुए भी, बेटे को आदेश देती है, जो पढ़ी-लिखी औरत भी दे नहीं पाती -

> ...गुल बेटा, इस बूढ़ी की सोच न कर ! जिससे तेरी घरवाली को ठंड पड़े, तू वही कर !

(सोबती 2007:58)

आलोच्य उपन्यास में एक ही नारी के परिस्थितिवश बदलने वाले दो रूपों का भी चित्रण हुआ है, जो बड़े विचित्र मालूम पड़ते हैं।इस परिवार की छोटी बहूँ, फूलावन्ती ससुराल में जब रह रही है, तब दिल की साफ नहीं रहती, जैसे -

> ...माथे पर हाथ मार-मार रोने लगी-हम बेचारे किसी का नहीं सुहाते ! इस घर हमारा कोई हिस्सा हक नहीं तो हमारी छप्परी अलग कर दो! बन आएगी तो कमाकर रूखी-सूखी खा लेंगे।न होगा तो मसानों में जा सोएँगे।...

(सोबती 2007:45)

फिर भी, ससुराल छोड़कर जब वह पति के साथ अपने पीहर चली जाती, तब वहाँ पूरी स्वतंत्रता में मचलने लगती है-

> ...चिलमन से अंदर आती धूप देख जी में कुछ ऐसी ठंड पड़ी कि बिना कहे न बनता हो।ससुराल की कैद से निकल जैसे फिर से नयी दुनिया में आयी हो।पहनने को 'हरी छाल' का जोड़ा निकाला और साबुन की टिकिया ले धनवन्ती की सबसे छोटी बहू पीहर के नहान-घर में खुशी-खुशी नहाने चली ।...

(सोबती 2007:59)

तत्कालीन सामाजिक परिवेश पर ध्यान देते हुए लेखिका ने दिन-प्रति-दिन बिगड़ने वाली घर-परिस्थिति तथा मान मर्यादाओं का अंकन भी गुरुदास के शब्दों में किया है, जिससे उसपर बुजुर्गों की धारणा का आभास मिलता है -

> ...यह कलिजुग है, कलिजुग! आँख का पानी उतर गया तो फिर क्या घर-घराने की इज़्ज़द और क्या लोक-मरजाद?...

(सोबती 2007:17)

इस प्रकार प्रत्येक देश के लिए साधारण पारिवारिक घटनाओं तथा समस्याओं को कृष्णा सोबती ने बड़े मार्मिक ढंग से 'मित्रो मरजानी' में अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, जिसमें मनुष्य के अत्यंत आंतरिक भावों तथा आचरणों को भी प्रमुखता दी गयी है।

जैसे पहले अंकित किया गया है, आलोच्य उपन्यास का मुख्य वर्ण्य-विषय संयुक्त परिवार पर केन्द्रित है।इसलिए ही पारिवारिक मनुष्य से संबंधित सूक्ष्म-से-सूक्ष्म समस्त भाव लेखिका की कलम से अछूता न रह सके, जिससे पाठकों को उन चरित्रों तथा घटनाओं के साथ संबंध रखने का अवकाश प्राप्त हुआ है।वास्तव में ऐसा महसूस होने लगता है कि ये कहानी और किसी की नहीं हमारे घर-पड़ोस की कहानी है। गृहस्थी के सभी उलझनों का सामना करने के पश्चात अपनी ढलती उम्र में गुरुदास और धनवन्ती अपने तन-मन को खुद सँभालने की कोशिश में हैं, जिसे प्रत्येक देश तथा काल की सामाजिक यथार्थता कह सकते हैं -

> ...धनवन्ती! यह घर-गृहस्थी तो मोह-माया कह फुलवाड़ी ! एक बार खिली नहीं कि मनुक्ख नाशुक्रा बेर-बेर हाथ पसारे दाते से कुछ-न-कुछ माँगता ही जाता है।छोटी-सी बात मेरी पल्ले बाँध ले, साथिन ! जे थोड़ा-बहुत दान-पुण्य, धर्म-कर्म इस चलते भंडार से निकल जाए सो ही सुफल ।...

(सोबती 2007:88)

निष्कर्ष

'मित्रो मरजानी' उपन्यास एक ऐसी रचना है कि जिसके माध्यम से आधुनिक स्त्री का नया स्वरूप

हिंदी साहित्य में प्रथम अवस्था में उभर आता है। मित्रो नारी के शील-संस्कारों से परिपूर्ण परम्परागत स्वरूप से नितांत भिन्न छवि लेकर उत्तीर्ण होती है।कामवासना के प्रति मित्रो का अनन्य आवेश ही उपन्यास का केन्द्र विषय है। उसका प्रमुख कारण उसके घर का ही परिवेश है। मित्रो की कहानी मात्र उसकी यौन-अतृप्ति की कहानी न होकर उसकी अर्थपूर्ण वासना की भी कहानी है।यह कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य की संपूर्ण नारी पात्रों की अपेक्षा मित्रो यथार्थ का उद्घाटन करने वाली विवादस्पद नारी पात्र है। काम-अतृप्ति के कारण मित्रो मात्र शरीर के स्तर पर जीती है और बाकी सब उसे व्यर्थ लगता है। लेकिन उपन्यास का अंत होते-होते अपनी तृष्णा, वासना, विचारों और विकारों को खुले स्पष्ट शब्दों में कहने वाली मित्रो अपनी धारणाओं और मान्यताओं को बदलकर एक नया रूप धारण कर लेती है। जो नारी शारीरिक मान्यताओं को ही अपना परम लक्ष्य मानती थी, उसे यह ज्ञात होता है कि जिस दैहिक सौन्दर्य को वह सारे पुरुषों को कामासक्त करने की शक्ति मानती थी, वह देह पानी के बुद बुद के समान क्षणभंगुर है, असत्य है। उसमें रीतापन के अतिरिक्त कुछ शेष होता ही नहीं। यहाँ इस सत्य को लेखिका ने उभरा है ।

ग्रंथ-सूची

अँग्रेजी

Sobthi,Krishna and Anand Reema, Tr. The Heart Has Its Reasons.New Delhi:Katha Publisher,2005.

www.harmony.org Harmony-Celebrate age (Women's special) March 2013,Andrez,Reema

हिन्दी

अग्रवाल, साधना. वर्तमान हिंदी महिला कथा-लेखन और दाम्पत्य जीवन. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1995.

अमरनाथ. नारी मुक्ति का संघर्ष, नोएडा, रेमाधन प्रकाशन, 2007.

आरजू, मोजम्मिल हसन भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण. नयी दिल्ली: अजय शर्मा काॅमन वेल्थ पब्लिकेशन, 1993.

उपाध्याय, रमेश .आज का स्त्री आन्दोलन. दिल्ली:शब्द संधान प्रकाशन, 2004.

उपाध्याय, विश्वामित्र. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन और हिंदी साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1989.

गुप्ता, उर्मिला. स्वातंत्रयोत्तर कथा लेखिकाएँ. नयी दिल्ली: अनुराग प्रकाशन, 1978.

जैन, प्रतिभा और शर्मा, संगीता .भारतीय स्त्री: सांस्कृतिक संदर्भ. जयपुर: रावत पब्लिकेशन,1998.

टंडन, प्रतापनारायन .हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास. लखनऊ हिन्दी साहित्य भंडार, 1964.

तलवार, स्वर्णकान्ता. हिंदी उपन्यास और नारी समस्याएँ. इलाहाबाद: जयभारती प्रकाशन, 1993.

तिवारी, रामचंद्र. हिंदी का गद्य साहित्य. वाराणासी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2011.

तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, संपा.बीसवी सदी का हिंदी साहित्य. नयी दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2006.

देसाई, पारुकान्त.साठोत्तरी उपन्यास. कानपुर: चिंतन प्रकाश, 2002.

देसाई, मीरा. भारतीय समाज में नारी. दिल्ली: मैकमिलन प्रकाशन,1982.

मिश्रा, रामदरश. हिंदी उपन्यास का अंतर्यात्रा. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन,1992.

यादव, राजेन्द्र. उपन्यास-स्वरूप और संरचना. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन,1997.

सोबती, कृष्णा. मित्रो मरजानी. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.

ई-पत्रिका

तहलका (tehelkahindi.com), अप्रैल 21,2016 (मीनाक्षी तिवारी द्वारा कृष्णा सोबती का साक्षात्कार tehelkahindi.com

संपर्क सूत्र:
वरिष्ठ प्रवक्ता
हिंदी विभाग
कॅलणिय विश्वविद्यालय,श्री लंका
ई-मेइल: sanushanilmini@yahoo.com